सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

7. अव्यय

स्थानादि अव्ययों के भेद

(क) रीतिसूचक (क्रिया-विशेषण)
स्थानसूचक समयसूचक कारणवाचक सम्बन्धवाचक।

(ख) स्थान आदि वाचक अव्यय पदबन्धों की रचना एवं प्रयोग।

(ग) संयोजक अव्यय।

(घ) विस्मयादिबोधक अव्यय तथा संबोधक।

(ङ) अवधारक—भी, ही, तक, भर, तो।

(च) परसर्ग—विभक्ति और परसर्ग का अन्तर समझा दिया जायेगा।

परसर्गों के विभिन्न स्तर— 1. ले, ने, को (उपवाक्य स्तर पर) 2. से, तक
3. में, पर 4. अन्य

परसर्गों के प्रयोग—का, के, की, के, लिंग-वचन
की, के अव्यय
के अव्यय

(छ) नकारात्मक—न, नहीं, मत, ना।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

ध्यान देने योग्य बातें

सन्तुलन दो या दो से अधिक दृष्टिकोणों का गुणनफल होता है। आगमन प्रणाली, निगमन प्रणाली तथा सहयोग प्रणाली में से, जिसके द्वारा शिक्षण सुविधानुसार कुशलतापूर्वक व्याकरण का ज्ञान दे सके, अपनाये, विद्यार्थियों के सम्मुख उदाहरण रखकर, प्रश्नों की तालिका बनाकर नियमों को समझने और प्रयोग रूप में लाने के लिए गृह-कार्य में सम्भावित प्रश्न दिये जाने चाहिए, क्योंकि प्रश्नों द्वारा निश्चित स्थिति पर पहुँचा देना व्याकरण का प्रथम कार्य है।

व्याकरण का काम भाषा सिखाना नहीं, केवल भाषा को व्यवस्थित करना है। वाक्य का कौन-सा अंश किस स्थान पर रहना चाहिए, इसकी व्यवस्था करना तथा शब्दों का रूप स्थिर करना व्याकरण का उद्देश्य है, किन्तु भाषा में चमत्कार द्वारा सौन्दर्य उत्पन्न करना व्याकरण के बूते की बात नहीं। फिर भी व्याकरण शब्द और वाक्य पर अनुशासन करता है।

जिस हिन्दी भाषा का आज हम प्रयोग करते हैं, वह बहुत छनकर इस दशा को पहुँची है। इसमें संस्कृत तत्सम शब्दों के अतिरिक्त अपभ्रंश द्वारा बिगड़े हुए तद्भव शब्द भी आ गये हैं। ब्रज, अवधी, गुजराती, मराठी, बँगला, अंग्रेजी तथा उर्दू, फारसी, अरबी आदि भाषाओं के शब्द ज्यों-के-त्यों आ गये हैं। हिन्दी की इस विकासोन्मुखता के कारण शब्द-चयन का कोई व्यापक नियम नहीं बनाया जा सकता। साथ ही, नागरी के गद्य-पठन में लिंग, वचन, क्रिया, रूढ़ोक्तियों तथा मुहावरों की प्रयोग विषयक कठिनाइयाँ होती हैं। इसके अतिरिक्त हमारी भाषा में एक विचित्रता और है, वह यह है कि उसमें संज्ञा के साथ-साथ क्रिया का भी लिंग-परिवर्तन होता है, जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं है। अतः अध्यापक को पढ़ाते समय इस विशेषता की ओर भी छात्रों का ध्यान आकर्षित कराते रहना चाहिए। साधारणतः यह नियम है कि ईकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, परन्तु हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं जो ईकारान्त होते हुए पुल्लिग माने जाते हैं;—'मोती', 'घी', 'हाथी', 'पानी' आदि। इस प्रकार के अपवादस्वरूप नियमों से भी विद्यार्थियों का परिचय करा देना चाहिए।

इसी प्रकार क्रिया और कारकों में भी ध्यान रखने की आवश्यकता है। हिन्दी में कहीं-कहीं 'की', 'ने', 'को', 'से' आदि विभक्तियों का प्रयोग लोग प्रायः अशुद्ध करते हैं। अतः वाक्य-रचना के समय विद्यार्थियों को इस विषय में सावधान करा देना चाहिए।

व्याकरण का काम भाषा को व्यवस्थित करना मात्र ही है। अतः व्याकरण के बन्धन में चलती हुई भाषा भी भाव-संकेत पर पथ परिवर्तन कर देती है और व्याकरण को भी उनको मानने के लिए बाध्य होना पड़ता है, क्योंकि व्याकरण के पीछे भावों का गला नहीं घोंटा जा सकता। ऐसे स्थानों पर ही मुहावरों, अलंकारों तथा रूढ़ोक्तियों आदि का प्रयोग किया जाता है, परन्तु इनका प्रयोग भी सावधानी से करना चाहिए, नहीं तो अर्थ-भंग हो सकता है, जैसे—'आग बरस रही है', 'तुम मुझसे जलते हो' आदि मुहावरे उर्दू के हैं। अतः इनका अनुपयुक्त प्रयोग, सौन्दर्य चमत्कार के स्थान पर गुड़-गोबर भी कर सकता है।

परिणामतः भाषा-शिक्षण में व्याकरण-शिक्षण एक अनिवार्य अंग है। इसे मनोवैज्ञानिक ढंग पर नवीन प्रणाली द्वारा पढ़ना ही हितकर होगा। निगमन प्रणाली तथा आगमन प्रणाली का यदि मिश्रित रूप प्रयोग में लाया जाए तो अधिक लाभदायक हो सकता है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

6. क्रिया

1. **क्रिया का वाक्य में प्रयोग–**
   (क) **क्रिया का कर्मकत्व**–अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक, कर्तृपूरकापेक्षी, कर्मपूरकापेक्षी।
   (ख) **अन्विति**–पुरुषवचन तथा लिंगवचन की।
   कर्त्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया, कर्त्ता-कर्तृपूरक।
   कर्म-कर्मपूरक के बीच अन्विति होती है।
   अन्विति रहित रचना भाव प्रयोग में मिलती है।
   (ग) **अन्विति के आधार पर**–(अ) कर्तरि प्रयोग, (ब) कर्मणि प्रयोग, तथा (स) भावे प्रयोग।
   (घ) **वाक्य-विचार।**
2. **धातु की रचना–**
   1. सरल (मूल) धातु–चल्,
   2. मूलधातु से प्रेरणार्थक प्रत्यय लगाकर–चलावना,
   3. संज्ञा, विशेषणादि से–नामधातु–हथियाना,
   4. पुनरुक्ति मूलक धातु–मारमूर।
3. **रूप-तालिका** (लकार-माला)
   (क) सरल (मूल) लकार–
   1. चलता 2. चला 3. चलना
   4. मैं चलूँ (विधि) 5. चलिए, चलिएगा 6. मैं चलूँगा (भविष्य)
   7. तू चल (आज्ञा)
   8. संयुक्त लकार। मुख्य क्रिया + सहायक क्रिया 'होना'।
   1. चलता है। 2. चलता था। 3. चलता हो।
   4. चलता होगा। 5. चलता होता। 6. चला है।
   7. चला था। 8. चला हो। 9. चला होगा।
   10. चला होता।

इस प्रकार 16 काल-रूप (लकार) मिलते हैं। प्रत्येक लकार का प्रयोग पृथक्-पृथक् बताना चाहिए। एक लकार का एक से अधिक अर्थों में प्रयोग होता है।

4. **काल-प्रकार-पक्ष**–एक लकार से एक से अधिक व्याकरणिक कोटियाँ निर्धारित होती हैं।
   व्याकरणिक कोटियाँ हैं–
   काल–भूत, वर्तमान, भविष्य।
   प्रकार–निश्चितार्थ, सम्भावनार्थ, आज्ञार्थ, संदेहार्थ, संकेतार्थ।
   पक्ष–पूर्ण, अपूर्ण, सातत्य।
5. **संयुक्त क्रिया**–(क) धातु + धातु, (ख) संज्ञा, विशेषण + धातु।
   (क) धातु + धातु में केवल अन्तिम धातु लकार लेती है। पूर्व धातुएँ निम्नलिखित में से कोई चार रूप लेती हैं–
   = ता रूप चलता
   = आ रूप चला
   = ना रूप चलना
   = मूल रूप चल
   सहकारी धातु आ, जा, उठ, बैठ, ले, दे आदि हैं।
   (ख) संज्ञा, विशेषण + धातु।
6. **क्रिया से बनने वाले वर्ण–**
   संज्ञा–मुख्यतया क्रियार्थक संज्ञा।
   विशेषण–मुख्यतया पूर्ण कृदन्त और अपूर्ण कृदन्त।
   अव्यय–पूर्णकालिक कृदन्त
   इनकी रचनाएँ।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

(७) नकारात्मक—न, नहीं, मत, ना।

8. पद-व्याख्या एवं वाक्य-विश्लेषण

पूर्व पठित सामग्री के आधार पर पद के रूप की व्याख्या कर सकना एवं सरल, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों का विश्लेषण करना।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

10. रस, छन्द एवं अलंकार

नव रसों का ज्ञान। शब्दालंकार एवं अर्थालंकार का ज्ञान। मात्राओं से परिचय प्राप्त करते हुए दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया पद आदि का ज्ञान।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

2. शब्द-रचना

1. समास द्वारा शब्द-रचना। जैसे—घुड़सवार, सतसई, नोन-तेल।
2. प्रत्ययों द्वारा शब्द-रचना। उपसर्ग, प्रत्यय। जैसे—दुपहर, भरपेट, बड़प्पन।

Scanned with CamScanner

3. पुनरुक्ति :
   (1) पूर्ण पुनरुक्ति—'घर-घर'।
   (2) अपूर्ण पुनरुक्ति— (क) समानार्थक—मोटा-ताजा।
   (ख) विरोधार्थ—छोटा-बड़ा।
   (ग) प्रतिध्वन्यात्मक—अनाप-शनाप।
4. आन्तरिक सन्धि।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

पाचवा का विस्तार करें।

9. शब्दार्थ विचार

1. अर्थ की तीन शक्तियाँ

1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यंजना

2. शब्द और अर्थ का सम्बन्ध–

1. संकेतार्थ-परम्परा और रूढ़ि से 2. अनुरणन तथा अनुकरण से

3. अनेकार्थ–अनेक अर्थ कैसे बनते हैं ?

4. पर्याय–कैसे बनते हैं और पर्याय में सूक्ष्म अर्थ-भेद।

5. विपरीतार्थक–विलोम अर्थ ज्ञान।

6. समरूपत्व–विभिन्न स्रोतों से आने के कारण शब्द का रूप तो एक ही रहता है, किन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं जो प्रसंग से व्यक्त होते हैं; जैसे–बस (अं) मोटर, बस (फा), वस (सं)।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

11. सन्धि व समास

दीर्घ, गुण, वृद्धि, अयादि सन्धि। व्यंजन सन्धियाँ। हिन्दी की विशिष्ट सन्धियाँ। अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुब्रीहि समास। हिन्दी के विशिष्ट समास। सन्धि-विच्छेद एवं समास-विग्रह।

आयु, योग्यता और रुचि के अनुसार इनमें परिवर्तन किया जा सकता है। स्थायित्व नहीं होना चाहिये।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

3. संज्ञा

1. **संज्ञा भेद**—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक।
   —गणनीय-अगणनीय।
2. **संज्ञा-रचना**—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्ययों से प्रत्ययों द्वारा।
3. **संज्ञा की रूप-रचना**—
   (1) **संज्ञा और वचन**—एकवचन, बहुवचन।
   (2) **संज्ञा और लिंग**—स्त्रीलिंग और पुल्लिग।
   (3) **संज्ञा और विभक्ति**—ऋतु (मूल) और तिर्यक् (परसर्गीय)।
4. **रूप-तालिका**—रूप-तालिका की दृष्टि से चार उपवर्ग।
5. सम्बोधन। सम्बोधन के रूप। सम्बोधन तथा तिर्यक् बहुवचन में भ्रान्ति का निवारण।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

व्याकरण-शिक्षण

व्याकरण का अर्थ एवं महत्त्व

भाषा एक शक्ति—महान् शक्ति है। इसका दुरुपयोग और सदुपयोग—दोनों हो सकते हैं। देश और काल के कारण भी उनमें प्रतिपल, प्रत्येक स्थान पर परिवर्तन की सम्भावना रहती है। शारीरिक-मानसिक दोषों के कारण भी उसके स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। यदि नियमों द्वारा उसको स्थिर न रखा जाए तो भाषा की उपादेयता, महत्ता तथा स्वरूप ही नष्ट हो जायेगा। अतः भाषा के शीघ्र परिवर्तन को रोकने के लिए ही व्याकरण का उस पर नियन्त्रण कर दिया गया है, परन्तु व्याकरण भाषा का अनुशासन मात्र ही करता है, शासन नहीं। वह भाषा का सृजन नहीं, परिष्कार ही करता है।

जिस प्रकार प्रत्येक कार्य की सम्भावना के लिए, सामाजिक जीवन की सुविधा और सरलता के लिए मानव-व्यापारों को कुछ नियमों में आबद्ध कर दिया जाता है, उसी प्रकार भाषा के भी आवश्यकतानुसार कुछ नियम और सिद्धान्त बना दिये गये हैं, परन्तु क्या प्रत्येक व्यक्ति व्याकरण के नियमों का निर्धारण एवं आलोचना करने का अधिकार रखता है ? नहीं। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार उसके स्वरूप में परिवर्तन करने लगे तो भाषा का स्वरूप ही विकृत हो जायेगा, उसकी उपादेयता नष्ट हो जायेगी, उसके क्षेत्र में अराजकता और अव्यवस्था फैल जायेगी। भाषा की सुव्यवस्था के लिए हमारे पूर्वजों ने हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत में उसके व्याकरण के स्वरूप का निर्धारण किया था, जिसका आज तक भी संस्कृत भाषा अनुगमन करती आ रही है लेकिन वे नियम बिल्कुल अटल या स्थाई नहीं हैं। स्थायित्व तो जड़ है, विनाशक है, अतः भाषाविज्ञों का विश्वास है कि किसी सीमा तक सामान्य परिवर्तन आवश्यकतानुसार किये जा सकते हैं।

मानव स्वभाव से ही सौन्दर्यप्रिय प्राणी है। कलाकारों के अतिरिक्त साधारण पुरुष भी सौन्दर्य की थोड़ी-बहुत परख रखते हैं। अतः मानव असुन्दरता को हटाकर सौन्दर्य के निर्माण में लगा है। वह अपनी अन्य वृत्तियों के साथ-साथ भाषा में भी सुन्दरता लाना चाहता है। भाषा की सुन्दरता के लिए शब्द-शक्तियों (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), गुणों (ओज, माधुर्य, प्रासाद), रीतियों (वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली आदि) तथा अलंकारों का होना आवश्यक है। इसके विपरीत, भाषा-विज्ञान की अज्ञानता, बल-प्रयोग, पीढ़ी और स्थान-परिवर्तन, भावावेश, सादृश्य तथा व्यक्तिगत भिन्नताओं के कारण भाषा में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं, जिनको दूर कर भाषा में सुन्दरता लाना ही व्याकरण का कार्य है। अतः लक्ष्य और लक्षणों के व्यवस्थित वर्णन का नाम ही व्याकरण है।

व्याकरण की शाब्दिक व्युत्पत्ति वि+आ+कृ धातु+ल्युट् प्रत्यय के रूप में की जाती है। इसका अर्थ है—'व्याक्रियन्ते (व्युत्याद्यन्ते) शब्दा येन' अर्थात् जिसके द्वारा अर्थस्वरूप से शब्द-सिद्धि हो। पतंजलि ने महाभाष्य में व्याकरण को 'शब्दानुशासन' कहा है। यह भाषा का शासक न होकर अनुशासक है, अर्थात् इसके द्वारा भाषा को व्यवस्थित किया जाता है। डॉ० स्वीट के अनुसार व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

चाहिए।

व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन

प्राथमिक कक्षाएँ

कक्षा 1--मौखिक रचना करना--पढ़ना, लिखना आरम्भ कर दिया हो तो अक्षर, शब्द आदि का ज्ञान करा देना चाहिए।

कक्षा 2--वाक्य का आरम्भ और अन्त समझना। साधारण वाक्य का प्रयोग, छात्र का नाम, 'मैं' का प्रयोग। मनुष्यों, दिनों, महीनों, जानवरों आदि के नामों को लिखना। गद्य-पद्य में अन्तर समझना।

कक्षा 3--विराम, अर्द्धविराम, संज्ञा का ज्ञान करना। पत्रों पर पते लिखना और उनमें विराम का ध्यान रखना।

कक्षा 4--सम्बोधन चिन्ह, उद्देश्य और विधेय, संज्ञा के भेद, लिंग का ज्ञान, वचन का ज्ञान। अवकाश का प्रार्थना-पत्र। विलोम और शुद्ध शब्द का साधारण ज्ञान।

कक्षा 5--सर्वनाम, विशेषण तथा कारक का ज्ञान, व्यापारिक और व्यक्तिगत पत्रों का ज्ञान, पर्यायवाची शब्द तथा अन्य चिन्हों का ज्ञान।

निम्न माध्यमिक कक्षाएँ

कक्षा 6--क्रिया का ज्ञान व सर्वनाम में अन्तर, विशेषण का संज्ञा आदि से सम्बन्ध, क्रिया के रूप, अनेकार्थक, समानार्थक शब्द, उपवाक्य, मुहावरों का प्रयोग। रचना-कार्य में मुहावरों का ध्यान।

कक्षा 7--वाक्य-विश्लेषण, कारक, समास, अव्यय तथा निबन्ध की रूपरेखा, कहानी-निर्माण, पदाधिकारियों को पत्र आदि में व्याकरण का ध्यान, कहावतें।

कक्षा 8--अव्यय, क्रिया की पदव्याख्या, प्रत्यय, उपसर्ग, सन्धि, अलंकारों का साधारण ज्ञान। वर्णनात्मक निबन्ध में व्याकरण का ज्ञान।

उच्चतर माध्यमिक कक्षाएँ (कक्षा 9, 10, 11)

इस स्तर पर पूर्व पठित सामग्री की पुनरावृत्ति होगी और अनेक नये पाठ्य-बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जायगा। इस स्तर पर पठनीय व्याकरण की संक्षिप्त रूपरेखा यहाँ दी जा रही है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

भारत में व्याकरण की परम्परा

भाषा मानव जीवन में एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है जिसके माध्यम से मानव अपने विचारों, विश्वासों, संवेगों, सन्देहों तथा भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ है। भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों ने कई महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त दिये हैं जो भाषा के स्वरूप, संरचना तथा कार्य को स्पष्ट करते हैं। शब्द के स्वरूप, शब्दार्थ सम्बन्ध, वाक्य संरचना इत्यादि दृष्टियों से दिये गये विभिन्न मत भाषा-शिक्षण में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं तथा इन सिद्धान्तों की सार्थकता इस बात से सिद्ध होती है कि वर्तमान समय में भाषा-शिक्षण भाषा की संरचनात्मकता को प्राथमिकता देकर उसके एकार्थक स्वरूप पर बल देता है। भाषा की स्पष्टता तथा

Scanned with CamScanner

संक्षिप्तता अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। फलस्वरूप अपेक्षा यह की जाने लगी है कि भाषा भी गणित के समान नपी-तुली संरचनायुक्त हो तथा इसे निर्धारित सूत्रों के माध्यम से अधिगत किया जा सके। परिणामतः भाषा-शिक्षण के समय शिक्षक भी अक्षरों, शब्दों तथा वाक्यों की नपी-तुली संरचना के द्वारा भाषा सिखाता है जिससे उसे सरलता से सीखा जा सके, किन्तु इस प्रक्रिया में भाषा के द्वारा भावाभिव्यक्ति तथा भाव-सम्प्रेषण का 'अनूठा रचनात्मक पक्ष उपेक्षित रह जाता है। भाषा की इसी विडम्बना पर आक्षेप करते हुए अनीता अग्निहोत्री ने भाषा को केवल स्वीकारने या अस्वीकारने का मात्र उपकरण मानने से इनकार कर दिया है।[2]

उन्होंने यह भी कहा है कि भाषा का अत्यधिक मानकीकरण भाषा को समाप्त कर देता है।[3]

अतः भाषा को उसकी विशिष्टताओं के साथ सिखाकर ही भाषा-शिक्षण को सार्थक बनाया जा सकता है। यह एक सुखद सम्वाद है कि भारतीय प्राचीन दार्शनिक परम्परा ने अर्थ व्याख्या तथा विश्लेषण को पर्याप्त महत्त्व दिया है। आज के भाषा-शिक्षण में ऐसे सन्दर्भों की प्रासंगिकता का पुनरवलोकन अथवा मूल्यांकन करना एक सार्थक प्रक्रिया है।

भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से ही ग्रन्थों के अध्ययन हेतु व्याकरण के अध्ययन को अनिवार्य माना गया है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित उक्ति दृष्टव्य है—

अव्याकरणमधीतं भिन्न द्रोण्या तरंगिणी तरणम्।
भेषजमपथ्यसहितं त्रयमिदमकृतं वरं न कृतम्।।

अर्थात् बिना व्याकरण के पढ़ना, टूटी हुई नाव से नदी पार करना, बिना पथ्य के दवा ग्रहण करना इन तीनों के करने से इनका न करना अच्छा है।

भारत में भाषा के विश्लेषण की परम्परा बहुत प्राचीन है। पाणिनी संस्कृत भाषा के सर्वोत्कृष्ट पारखी हुए हैं। उनके पूर्व यास्क ने निरुक्त लिखकर भाषा-विश्लेषण की क्षमता का परिचय दिया था। यास्क से भी पूर्व गार्ग्य, गालव, शाकल्य और शाकटायन जैसे अनेक आचार्य हुए हैं। शाकल्य का उल्लेख तो पाणिनि ने अनेक बार किया है। पतंजलि का महाभाष्य व्याकरण का उत्तम ग्रन्थ है। हिन्दी के व्याकरण की रचना प्रारम्भ में अंग्रेजी व्याकरण की छाया में हुई। फिर भी हिन्दी ज्यों-ज्यों विकसित होती गई, उसके व्याकरण का विकास होता गया। कामताप्रसाद गुरु का व्याकरण कई दशाब्दियों तक हिन्दी का मानक व्याकरण बना रहा। इस क्षेत्र में आचार्य किशोरीदास वाजपेयी का योगदान सराहनीय है, जिन्होंने 'हिन्दी शब्दानुशासन' लिखकर हिन्दी को अनूठा एवं आधुनिक व्याकरण प्रदान किया है। प्रसिद्ध रूसी विद्वान डॉ० ज० म० दीमशित्स ने 'हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा' (राजकमल प्रकाशन) लिखकर हिन्दी की प्रकृति का उद्घाटन किया और वर्णनात्मक व्याकरण की परिपाटी का हिन्दी में श्रीगणेश किया।

हिन्दी साहित्य का क्षितिज विस्तृत हो रहा है, किन्तु यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कोश और व्याकरण के ग्रन्थों के सम्बन्ध में हिन्दी अभी रंक है। व्याकरण के नाम पर कामताप्रसाद गुरु और किशोरीदास वाजपेयी का व्याकरण ही एक ऐसा व्याकरण है जिसे प्रामाणिक कहा जा सकता है। अन्य छोटे-मोटे व्याकरण उनके आधार पर बनाये गये हैं। अंग्रेजी में कैलाग का हिन्दी व्याकरण है जो उपयोगी है, किन्तु ये दोनों व्याकरण बहुत पुराने हो चुके हैं। हिन्दी का साहित्य इधर काफी समृद्ध हुआ है और नये-नये प्रयोग भी सामने आये हैं। इनको दृष्टि में रखते हुए अन्य व्याकरण ग्रन्थों की आवश्यकता है जो सबके लिए उपयोगी हों। आज हिन्दी भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण संसार में पढ़ाई जा रही है। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, चीन आदि सभी देशों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। ये सभी देश अपने-अपने ढंग से व्याकरण और पाठ्य-पुस्तकें तैयार कर रहे हैं और हमें आश्चर्य नहीं होगा यदि विदेशी विद्वान् हिन्दी विद्वानों से पहले हिन्दी का नया प्रामाणिक व्याकरण तैयार कर लें। क्या हमारे अन्दर ऐसी क्षमता नहीं है कि हम अपने विषयों में भी गम्भीर कार्य कर सकें ? और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में अपने परिश्रम और विद्वता का लोहा मनवा लें ? शायद क्षमता की कमी नहीं है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग जैसी संस्थाएँ अब आर्थिक सहायता भी देने लगी हैं। हमारी मूल समस्या लगन का अभाव है। आज़ादी के बाद से जब हमें

Scanned with CamScanner

अपेक्षाकृत अधिक साधन और सुविधाएँ मिलने लगी हैं, हम अधिक लोभी और श्रमहीन हो गये हैं। पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, श्री श्यामसुन्दरदास, कामताप्रसाद गुरु, किशोरीदास वाजपेयी आदि के समय में उतने साधन नहीं थे जितने आज के एक साधारण प्रवक्ता के पास हैं, किन्तु अभावों के रहते हुए भी हमारे पूर्व विद्वानों में एक 'मिशनरी स्पिरिट' थी, अटूट लगन थी। यद्यपि हिन्दी में काम करने वालों को उन दिनों हेय दृष्टि से देखा जाता था तथापि हमारे विद्वानों ने इसकी परवाह नहीं की और ऐसी उत्कृष्ट कृतियाँ दीं जिनसे हिन्दी का भण्डार समृद्ध हुआ। शुक्ल जी का इतिहास आज भी महत्त्वपूर्ण है। एक खण्ड में उससे अच्छा और प्रामाणिक इतिहास अभी भी नहीं आया। कुछ अन्य लोगों ने इतिहास अवश्य लिखे हैं, किन्तु उनमें सन्तुलन का अभाव है और ऐतिहासिक दृष्टि की कमी है। नागरी प्रचारिणी सभा ने जो शब्द सागर तैयार कराया था, उससे अंच्छा कोश अभी भी कोई नहीं है। हमें व्याकरण की अपनी प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में और अधिक कार्य करना है।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

व्याकरण की शिक्षा

शुद्ध भाषा का प्रयोग एक कला है, कोरा किताबी ज्ञान ही नहीं, क्योंकि नियम कंठस्थ होने पर भी अभ्यास न होने से अशुद्ध प्रयोग करते हुए बालक देखे गये हैं। अतः शुद्ध भाषा सिखाने के लिए व्याकरण का सैद्धान्तिक ज्ञान उतना आवश्यक नहीं, जितना व्याकरण के नियमों का व्यावहारिक उपयोग। कुछ विद्वानों के अनुसार तो भाषा-शिक्षण में व्याकरण की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह हमारे व्यावहारिक जीवन में काम नहीं आता लेकिन भाषा की शुद्धता तथा स्पष्टता के लिए कुछ व्यक्तियों के मतानुसार व्याकरण भाषा-शिक्षण का अपरिहार्य तथा आवश्यक अंग है।

प्रत्येक भाषा की संघटना अपने आप में पूर्ण है। यह आवश्यक नहीं कि एक भाषा का व्याकरण दूसरी भाषा के व्याकरण का प्रतिमान बने। हिन्दी भाषा की प्रकृति अंग्रेजी भाषा से भिन्न है। स्वयं अंग्रेजी भाषा की प्रकृति लैटिन से भिन्न है, किन्तु दुर्भाग्यवश अंग्रेजी का व्याकरण लैटिन व्याकरण की पद्धति पर बना है और अंग्रेजी व्याकरण का भूत हिन्दी व्याकरण पर सवार रहा है। प्रारम्भ में हिन्दी व्याकरण पर अंग्रेजी का प्रभाव पड़ा और छात्रों को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि के भेद व उपभेद अंग्रेजी के आधार पर रटाए जाने लगे। आज यह मान्य सिद्धान्त बन चुका है कि भाषा-शिक्षण में लैटिन के ढंग का व्याकरण अनुपयोगी है। यही हाल फ्रेंच भाषा के व्याकरण का रहा है। उसका भी व्याकरण लैटिन भाषा के व्याकरण के आधार पर ही प्रारम्भ हुआ। सन् 1940 के बाद पश्चिम में अंग्रेजी और फ्रेंच के व्याकरण पर से लैटिन का प्रभाव घटता गया और आज इन दोनों भाषाओं का व्याकरण इनकी अपनी प्रकृति पर आधारित हैं। वस्तुतः यही सही दिशा है क्योंकि किसी भी भाषा का विकास किसी विशेष परिस्थिति में होता है और उसी के अनुसार उस भाषा की प्रकृति बनती है। उसकी प्रकृति पर किसी अन्य भाषा की प्रकृति का आरोपण ठीक नहीं है।

अब भाषा-शिक्षण में शुद्धि या अशुद्धि पर इतना बल नहीं है। 'चाहिए' के स्थान पर अब 'ऐसा भी होता है' की धारणा काम करती है। लैटिन व्याकरण में काल्पनिक पूर्णता का भाव था। अब पाणिनीय पद्धति के व्याकरणों की ओर लोगों का ध्यान जाने लगा है। पाणिनीय व्याकरण में सर्वस्वीकृत रूपों के विकास की प्रक्रिया पर बल है।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक विचारधारानुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में व्याकरण का शास्त्रीय शिक्षण व्यर्थ ही है, क्योंकि छोटा बालक अनुकरण से भाषा सीखता है। उसे व्याकरण का शास्त्रीय ज्ञान कराना उस पर अस्वाभाविक रूप से बोझ लादना है। उसका कोमल मस्तिष्क शास्त्रीय विचारों को किस प्रकार समझ सकता है ? उसकी दृष्टि स्थूल पर जमती है, सूक्ष्म पर नहीं।

बालक का शब्द-भण्डार जब समृद्ध तथा वाक्य-विन्यास विस्तृत हो जाए तो उसको व्याकरण के उपयोगी सामान्य सिद्धान्तों का ज्ञान कराना यथेष्ट है। इस प्रकार भाषा-शिक्षण में व्याकरण का निम्न स्वरूप होना चाहिए–

1. व्याकरण का ज्ञान प्रारम्भिक कक्षाओं में प्रयोग द्वारा ही कराया जाना चाहिए।
2. निम्न माध्यमिक कक्षाओं में बच्चों की परिभाषा का ज्ञान उदाहरणों के बाद समझाना आवश्यक है।
3. उच्च माध्यमिक कक्षाओं में सामान्य नियम और उनकी आलोचना भी आवश्यक हो जाती है।

व्याकरण-शिक्षण का आरम्भ वाक्य द्वारा होना चाहिए, क्योंकि बालक अथवा व्यक्ति पूर्ण वाक्य ही बोलता है,[1] चाहे वह एक शब्द का हो। वाक्य ही अर्थ को शक्ति देता है, शब्द नहीं। बालक की प्रगति के लिए पहले

Scanned with CamScanner

पूर्ण का ज्ञान कराना चाहिए, तब अंश का। वाक्य के पश्चात् वाक्य के मुख्य अंश—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया का तथा उनमें व्याप्त नियमों का उदाहरणों द्वारा निरूपण कराना चाहिए। छात्रों की सहायता से सिद्धान्त-निरूपण और तत्पश्चात् उनका प्रयोग तथा अभ्यास कराया जाना ही इष्ट है।

जब छात्र उच्च कक्षा में पहुँचते हैं तो उन्हें व्याकरण के नियमों-उपनियमों का काफी ज्ञान हो जाता है। अतः पूर्वज्ञान के आधार पर उन्हें सूक्ष्म रूप से गत विषयों का अध्ययन करना चाहिए तथा कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य, काल, कर्त्ता, कर्म, कारक, सन्धि, पदव्याख्या, अलंकार तथा समास आदि का ज्ञान भी करा देना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

व्याकरण-शिक्षण प्रणाली

यदि उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अनुसार निम्न प्रणालियों द्वारा व्याकरण की शिक्षा दी जाय तो छात्रों को अधिक लाभ पहुँचाया जा सकता है। व्याकरण-शिक्षण की प्रचलित प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं—

1. पाठ्य-पुस्तक प्रणाली।
2. अव्याकृति प्रणाली।
3. निगमन प्रणाली।
4. आगमन प्रणाली।
5. सहयोग प्रणाली।

(1) **पाठ्य-पुस्तक प्रणाली**—इस प्रणाली को विकृत रूप में सुग्गा प्रणाली भी कहते हैं। इसमें व्याकरण-पुस्तक को लेकर सस्वर वाचन करा दिया जाता है या पुस्तक को आधार बनाकर बिना समझे-बूझे व्याकरण के नियम-उपनियम रटवा दिये जाते हैं। ऐसी रटन्त विद्या से हानि के स्थान पर कोई लाभ नहीं, क्योंकि ऐसी शिक्षा व्यावहारिक जीवन में कुछ सहायता नहीं कर सकती।

Scanned with CamScanner

(2) अव्याकृति प्रणाली—इस प्रणाली के समर्थक व्याकरण-शिक्षा की अलग महत्ता स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि उत्तम रचनाओं के अध्ययन से स्वयं ही भाषा पर अधिकार हो जायेगा लेकिन यह उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयोगी हो सकती है। छोटी कक्षाओं के लिए यह प्रणाली निरर्थक ही सिद्ध होगी।

(3) निगमन प्रणाली—व्याकरण के नियम सूत्र वाक्य के रूप में कण्ठस्थ करा दिये जाते हैं और बाद में उदाहरण द्वारा समझा दिए जाते हैं। संस्कृत व्याकरण की शिक्षा में इस विधि का प्रायः उपयोग किया जाता है। इसे सूत्र-विधि भी कहते हैं।

(4) आगमन प्रणाली—यह निगमन प्रणाली की ठीक उल्टी प्रणाली है। प्रथम पर्याप्त उदाहरण छात्रों के सम्मुख रखे जाते हैं। फिर उनसे प्रचलित नियम निकलवाये जाते हैं और उनका अभ्यास कराया जाता है। इसमें छात्रों की उत्सुकता अन्त तक बनी रहती है, जिससे वे सब बातें ध्यान से सुनते, समझते और धारण करते हैं। अतः निगमन प्रणाली से यह अधिक उपयोगी और मनोवैज्ञानिक है। व्याकरण-शिक्षण में इसी प्रणाली का प्रयोग उत्तम है।

(5) सहयोग प्रणाली—इस प्रणाली वाले अव्याकृति प्रणाली के समर्थकों की भाँति दूर तो नहीं जाते, परन्तु वे इतना अवश्य स्वीकार करते हैं कि आवश्यकतानुसार रचना-शिक्षण के साथ-साथ व्याकरण के नियमों से भी छात्रों को परिचित कराया जा सकता है।

ध्यान देने योग्य बातें

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

1. वाक्य-संरचना और शब्द वर्ग

1. वाक्य, उपवाक्य, पदबन्ध, पद, शब्द और शब्दांश (धातु-प्रत्यय) का सामान्य परिचय।
2. सरल वाक्य। संयुक्त तथा मिश्र वाक्य।
   मुख्य उपवाक्य। गौण उपवाक्य (संज्ञा, विशेषण, क्रिया-विशेषण)।
3. उद्देश्य-विधेय, उपवाक्य अथवा सरल वाक्य के घटक—कर्त्ता, कर्म, (पूरक), क्रिया और अनुषंगी।
4. अन्विति। लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार।
   अन्विति सहित रचना—विशेषण-विशेष्य, कर्त्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया।
   अन्विति रहित रचना—भाव प्रयोग।
5. क्रम। वाक्य में उपवाक्यों का, उपवाक्य में पदबन्धों का, पदबन्ध में पदों का, पदों में शब्दों का।
6. शब्द वर्ग। नामिक-महावर्ग—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण।
   अव्यय महावर्ग—क्रिया-विशेषण, संयोजक, विस्मयादि बोधक।
   निपात महावर्ग—अवधारक, नकारात्मक, परसर्ग।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

4. सर्वनाम

1. **सर्वनाम के भेद**—पुरुषवाचक इत्यादि।
2. **सर्वनाम की रूप-रचना।**
3. **रूप-तालिका।**
4. **सर्वनामों का भाषण में प्रयोग**—
   (क) तुम, तू, आप का प्रयोग।
   (ख) जो—सो (वह) का प्रयोग।
   (ग) यह, वह। केवल शब्द के स्थान पर ही नहीं आते वरन् पूरी परिस्थिति के लिए संकेत करते हैं।
   (घ) आप—अन्य पुरुषी, मध्यम पुरुषी, निजवाचक।
   (ङ) कौन और क्या में अन्तर। कौन-सा का सजीव और निर्जीव दोनों के साथ प्रयोग।
5. (क) **सामाजिक सर्वनाम**—सब कोई।
   (ख) **बलार्थक सर्वनाम**—मुझी, इसी, यही, वही।
   (ग) **पुनरुक्तिजन्य सर्वनाम**—कोई-न-कोई, कौन-कौन, जो-जो।

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण 'A'

Unit III:

व्याकरण शिक्षण

a. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व
b. भारत में व्याकरण की परम्परा
c. व्याकरण की शिक्षा
d. व्याकरण के पाठ्यक्रम का साधारण विभाजन
e. वाक्य - संरचना और शब्द वर्ग
f. संज्ञा
g. सर्वनाम
h. विशेषण
i क्रिया
j अव्यय
K. पद - व्याख्या एवं वाक्य - विश्लेषण
L. शब्दार्थ विचार
M रस, छन्द एवं अलंकार
N. सन्धि व समास
O. व्याकरण - शिक्षण प्रणाली
P. ध्यान देने योग्य बातें

By:
Dr. Asha Kumari Gupta.

Scanned with CamScanner

5. विशेषण

1. **विशेषण का प्रयोग**—विशेषण-विशेष्य (उद्देश्य), पूरकस्थानी (विधेय) संज्ञावत् प्रयोग।
2. **विशेषण के दो प्रमुख भेद**—गुणवाचक, मात्रावाचक।
3. **विशेषणों की रचना**—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अपव्यय से।
4. **विशेषणों की पुनरुक्ति**—छोटा-छोटा, भोला-भाला।
5. **विशेषणों की रूप-रचना**—विकारी तथा अविकारी वर्ग।
6. **मात्रावाचक विशेषण के भेद**—अनिश्चित तथा निश्चित।
7. **संख्या विवेचन**— (क) भेद— गणनावाचक (पूर्णांक, अपूर्णांक)
   क्रमवाचक
   आवृत्तिवाचक
   समुदायवाचक
   (ख) गिनतियों की निश्चित वर्तनी।
   (ग) तिथियों की तालिका।

Scanned with CamScanner